chapter-2

अध्याय-2

हिन्दी साहित्य के इतिहास में ब्रजभाषा काव्य का आधुनिक युग और ब्रजकाव्य का प्रदान

द्वितीय अध्याय

हिन्दी साहित्य के इतिहास में ब्रजभाषा काव्य का आधुनिक युग और ब्रजकाव्य का प्रदान

हिन्दी साहित्य का इतिहास बहुत ही विस्तृत और विशाल है इसलिए हिन्दी साहित्य को विभिन्न कालों में विभाजित किया गया हैं। इस विभाजन का आधार उस काल की मुख्य साहित्यक प्रवृत्ति के आधार पर किया गया है, किन्तु इस का यह अर्थ नहीं की मुख्य प्रवृत्ति के अलावा अन्य विषयों में काव्य की रचना ना हुई हो। **आचार्य शुक्ल जी** ने लिखा है कि ''यद्यपि इन कालों की विशेष प्रवृत्ति के अनुसार ही इनका नामकरण किया गया है तथापि यह न समझना चाहिए कि किसी विशेष काल में ओर प्रकार की रचनाएँ होती ही नहीं थी।''[1]

हिन्दी साहित्य का इतहिास लिखने का प्रयत्न अनेक विद्वानों ने किया हैं सर्वप्रथम ग्रास-द तासी ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखने का प्रयत्न किया। उसके बाद शिवसिंह सेगंर, मिश्रबंधु, डॉ. ग्रियर्सन आदि ने इस दिशा में कार्य किये किन्तु हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम प्रमाणिक और वैज्ञानिक इतिहास देने का कार्य आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया है। इन्होंने साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों के आधार पर कालि विभाजन किया जो सर्वमान्य है।

1. आदिकाल - संवत 1000 से 1375 तक
2. मध्यकाल - संवत 1375 से 1900 तक
   - भक्तिकाल - संवत 1375 से 1700 तक

- रीतिकाल - संवत 1700 से 1900 तक

3. आधुनिककाल - संवत 1900 से अब तक

हिन्दी साहित्य के इतिहास में काव्य का सृजन अनेक भाषाओं में हुआ जैसे अवधी, मगधी, संस्कृत, ब्रज, खड़ीबोली आदि। काव्य में हर एक भाषा की अपनी अहम भूमिका रहती है।

आदिकाल जो कि संवत् 1000 से 1975 माना गया है। इस काल में कुछ रचनाएँ ऐसी है जिन्हें अपभ्रंश काव्य का नाम दिया गया है। ब्रजभाषा जो कि शौरसेनी अथवा नागर अपभ्रंश से उत्पन्न हुई है जिसका उद्दीपन 12वीं शताब्दी से माना जाता है इस काल में ब्रजभाषा अथवा बज्ररचित काव्य भाषा को पिंगल के नाम से जाना जाता था यह मध्यदेश की साहित्यक भाषा थी यह सिर्फ एक ही स्थल की ना होकर अन्य जगहों पर भी प्रचलित थी।

''ब्रजरचित काव्यभाषा केवल राजस्थान में ही नहीं प्रचलित थी पजांब, मध्यदेश, अवध, बिहार, यहाँ तक कि महाराष्ट्र, उड़ीसा, बंगाल, आसाम, और नेपाल में भी प्रचलित थी कोई रचना हिन्दी के अंतगर्त क्यों मानी जाय इसके लिए आधार था उसकी भाषा का ब्रजरचित होना।''[2]

आदिकाल में ब्रजभाषा को पिगंल कहा जाता था इस काल की मुख्य कृतियाँ है।

''जगनिक के ''आल्हखंड'' उक्तिव्यक्ति प्रकरण, देसीनाममाला और चद्रववरदाईवृत्त, पृथ्वीराज रासो आदि में इसी भाषा के उदाहरण मिलते है। सूरजमल का ''वशंभास्कर'', असाइत की ''हसांउली'', शारगधर का हम्मीर काव्य, श्रीधर का रमणलाल छंद, आदि इसी भाषा की कृतियाँ मानी जाती है।''[3]

मध्यकाल जो कि, संवत 1375 से 1900 तक माना जाता है इस काल में भक्ति परक रचनाएँ रची गई तो दूसरी और समय व परिस्थति के बदलाव स्वरूप रीतिपरक रचनाएं भी रची गई। संवत 1375 से 1700 तक के समय को भक्तिकाल नाम दिया गया है क्योंकि इस काल में भक्तियुक्त रचनाओं की अधिकता थी संवत् 1700 से 1900 तक के समय को रीतिकाल कहते है क्योकि इस समय रीतियुक्त रचनाओं की अधिकता थी। इस काल में काव्य की भाषा पूर्णरूप से पनपकर सामने

आई।

''भाषाशास्त्रियों का एक संप्रदाय मानता है कि राज्य क्रातियाँ, आक्रमण या विप्लव सामाजिक ढ़ाचां बदलने मे तो सहायक होते है। किन्तु भाषा के ढ़ाचे में परिवर्तन नही ला सकते क्योंकि भाषा समाज के ढांचे का अंश नहीं आच्छादन है।''[4]

ब्रजभाषा जिसे आदिकाल में पिंगल के नाम से पहचानते थे मध्यकाल में यह ब्रजभाषा के नाम से प्रचलित हुई। ''हिन्दी साहित्य के मध्यकाल को जो स्वर्णकाल कहा जाता है उसका कारण ब्रजभाषा का स्वर्ण साहित्य ही है।''[5]

अष्टछाप के कवियों ने ब्रजभाषा को काव्य का माध्यम स्वीकार किया।

''कृष्ण भक्ति परंपरा में श्रीकृष्ण की मूर्ति को ही लेकर प्रेमतत्व की बड़े विस्तार के साथ व्यंजना हुई है। उनके लोकपक्ष का समावेश उसमें नहीं है। इन कृष्णे प्रेमोन्मत गोपिकाओं से घिरे हुए श्री कृष्ण है बड़े-बड़े भूपालों के बीच लोक व्यवस्था की रक्षा करते हुए द्वारिका के श्रीकृष्ण नहीं है। कृष्ण के जिस मधुर रस को लेकर ये भक्त कवि चले है वह हास-विलास के तरंगों से परिपूर्ण अनन्त सौदर्य का समुद्र है।''[6]

इस समय के कवियों ने श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर त्यौहारों, ऋतुओं, विविध उत्सवों, नगरों, प्राकृतिक, शृंगारिक और सांस्कृतिक सभी पर रचनाएँ प्रस्तुत की। और रचनाएँ ब्रजभाषा में रचकर काव्य में मधुर शब्दों का प्रयोग कर काव्य को मधुर और सुन्दर बनाया जिनमें मुख्य कवि है। सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, नंददास, चर्तुभुजदास, गोविन्द स्वामी, छीतस्वामी जो कि अष्टछाप के कवियों के नाम से भी जाने जाते हैं।

''इस काल में सगुण भक्तिधारा के कृष्णोपासक कवियों ने तो ब्रजभाषा का अवलम्ब ग्रहण किया ही था किन्तु रामोपासक कवियों ने भी ब्रजभाषा का सहारा लिया। इसके उदाहरण अवधी के महाकवि तुलसीदास भी रहे जिन्होंने कवितावली, गीतावली, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, दोहावली, कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका, आदि रचनाओं में ब्रजभाषा को तो काव्यांभिव्यक्ति का माध्यम स्वीकार। इनके अतिरिक्त प्राणचन्द चौहान, हृदयराम आदि रामभक्त कवियों ने भी ब्रजभाषा में रचनाएँ की। सगुणोपासक कवियों में नरहरि, बंदीजन, बीरबल, गंग, नरोत्तमदास, केशवदास, रहीम, बनारसीदास सेनापति, बिहारी, जटमल, राजा टोडरमल, तानसेन मनोहर,

होलाराम, लालादास, कृपाराम, आशानन्द बलभद्र मिश्र, जमाल, कादिरबक्स मुबारक, पुहकर आदि अनेक कवियों ने सगुणोपासना को अपने काव्य का आधार बनाते हुए ब्रजभाषा में रचनाएं कीं।''[7]

सवंत 1700 से 1900 तक का समय रीतिकाल कहलाता है, इस काल में समय परिस्थिति के बदलाव के स्वरूप काव्य के विषय में बदलाव आया। भक्तिकाल में राधाकृष्ण जो कि एक आराध्य के रूप में प्रस्तुत किये जाते थे वह अब काव्य में एक नायक, नायिका के रूप में प्रस्तुत किए जाने लगे। इसमें नायिका का नख-शिख वर्णन, शृंगार क्रीडाएं आदि रच कर काव्य को शृंगारिक बना दिया। किन्तु भाषा में कोई बदलाव नहीं आया काव्य की भाषा ब्रजभाषा ही थी। ''उस समय इस भाषा के महात्मा कवियों ने बज्रमाधुरी द्वारा जन-मानस को सरस सुहावना बनाया और देशो-दिशाओं में ज़गन्मोहन की मधुर मुरली सुनाई। सूरदास के पूर्ववर्ती कवि बैजूबावरा का यह पद देखिए जिसमें शृंगार और भक्ति की यमुना-गंगा श्यामल धवल हिलोरे लेती हुई दिखाई देती है।''

''मुरली बजाइ रिझाई लई मुख मोहनतें।
गोपीरीझि रही रस-तांनन सां, सुध-बुध सब बिसराई।
धुनि सुनि मन मोह मगन भई देखत हरि आनन
जीव जंतु पसुपंछी सुर नर मुनि मोहे,
हरे सब प्रानन।
'बैजू' बनवारी बंसी अधर धरि बृन्दावन चंद
बस किए सुनतहि कानन।''[8]

रीतिकाल का काव्य शृंगार से ओतप्रोत है। और रतिभाव से रचा बसा है किन्तु कवि इसे बुरा नहीं मानते है वे इसे अपने प्राणो से अधिक प्यारा मानते है। **''कविवर बिहारी लाल ने तो डंके की चोट पर कहा है कि''**

''ब्रजवासिन कौ उचित धन, सो धन रुचित न कोई।
सुचित न आयौ सुचितई कहौ कहाँ ते होई।''[9]

रीतिकालीन ब्रजभाषा के लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठित कवियों में चिंतामणि त्रिपाठी, महाराजा जशवंत सिंह, मण्डन, भूषण, कुलपति मिश्र, कालिदास, नेवाज,

देव श्रीधर, सूरति मिश्र, श्रीपति, कृष्ण कवि, गजन प्रीतम, भिखारीदास, तोष, सोमनाथ, रसलीन, रघुनाथ दुलह, कुमार मणिभट्ट, शिवसहाय दास, रत्नकवि, हरिनाथ, चन्दन कवि, देवकी नन्दन, भान कवि, बेनी-बंदीजन, करन कवि, पद्माकर, ग्वाल, प्रतापशाही, रसिक, गोविन्द, बनवारी, वृन्दाआलम, वैताल, गुरु गोविन्द सिंह, श्रीधर, धनआनंद, रसनीधि, गोधराज, बंशीहशराज, गुमान मिश्र, सरजू राय पंडित, सूदन, मणिदेव, गोकुलनाथ, रामचन्द्र मंचित, मधुसुदन दास, मनियारसिंह, सम्मट ठाकुर, ललक दास, नवल सिंह कायस्थ, राम सहाय, दीन दयाल गिरि, पजनेस, गिरधरदास, द्विजदेव आदि विविध कवियों ने ब्रजभाषा में काव्य रनचाएं प्रस्तुत करके रीतिकाल की समग्र काव्य प्रवृत्ति को इस सर्वग्राह्य सरस ब्रजभाषा से आच्छादित रखा। [10]

रीतिकाल के पश्चात संवत 1900 से अब तक के समय को आधुनिक काल कहा जाता है। आधुनिक काल में हिन्दी साहित्य में नवक्रन्ति हुई पद्य साहित्य के साथ-साथ गद्य साहित्य का भी निर्माण उच्चकोटी में होने लगा जिस से आचार्य शुक्ल ने इसे गद्य युग कहा और आधुनिक काल को उपकाल खंड़ो में विभाजित किया।

1. पुनः जागरण काल तथा भारतेन्दुयुग
2. द्विवेदी युग
3. छायावादी युग / प्रेमचन्द युग
4. प्रगतिवादी
5. प्रयोगवादी

भारेन्दु युग हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में नई क्रान्ति के रूप में उभर कर आयी 18वीं शताब्दी तक जो भी साहित्य रचा गया वह पद्य ही था गद्य की तो कुछ ही रचनाएँ हैं और अधिकतर साहित्य ब्रजभाषा में रचा गया, जिससे इस समय तक ब्रजभाषा पूर्ण रूप से सुन्दरता के कलेवर के साथ पद्य में अपना मुख्य स्थान प्राप्त कि हुई थी किन्तु 18 वीं शताब्दी के पूर्वाध में नवीन शिक्षा और ईसाई धर्मग्रन्थों में प्रचार में खड़ीबोली का आगमन हुआ। खड़ी बोली की नींव भारेतन्दु हरिशचन्द्र ने रखी थी मगर उन्होंने ब्रजभाषा का साथ नहीं छोड़ा। **भारतेन्दु जी** ने एक स्थान पर लिखा है **''कविता की भाषा निःसंदेह ब्रजभाषा ही है और दूसरी भाषाओं की कविता उतना**

चित्त नहीं पकड़ पाती अथवा कविता के लिए मधुर शब्द आवश्यक है। एवं ब्रजभाषा बहु सम्मति से मधुर भाषा है।''[11]

''मुजफ्फरपुर के बाबू अयोध्याप्रसाद खत्री खड़ी बोली के प्रबल प्रचारक थे उनके खड़ी बोली पद्य सग्रहों को देखकर भारतेन्दु जी के समकालीन कवि मित्र पंडित प्रतापनारायण मिश्र ने लिखा था। लेखक महाशय की मनोगति तो सराहनीय योग्य है पर साथ असंभव भी है। सिवाय फारसी छंद के और दो तीन चाल की लावनियों के और कोई छंद उसमें बनाना भी ऐसा जैसा किसी कोमलांगी सुंदरी को कोट बूट पहनाना। हम आधुनिक कवियों के शिरोमणि भारतेन्दु जी से बढ़कर हिंदी भाषा का आगही दूसरा न होगा। जब उन्हीं से यह न हो सका तो दूसरों का प्रयत्न निष्फल है। बहुत कहते हैं, कि ब्रजभाषा की कविता हर एक समझ नहीं सकता पर उन्हें यह समझना चाहिए कि आपकी खड़ी बोली को कौन समझ लेता है। यदि सबको समझना मात्र प्रयोजन है तो सीधे-सीधे गद्य लिखे।''[12]

''भारतेन्दु युग में भारतेन्दु जी के प्रयास से कुछ वरिष्ठ रचानाकारों का एक संगठन तैयार हो गया था जिसे भारतेन्दु मंडल के नाम से जाना जाता है। इस मंडल के अधिकांश रचनाकार विद्वान गद्य के लिए नागरी हिन्दी अर्थात खड़ीबोली का समर्थन करते थे। किन्तु पद्य में उन्होंने ब्रजभाषा को ही स्वीकार किया था। इस मंडल के विद्वान रचनाकारो में बालकृष्ण भट्ट, दामोदर शास्त्री सप्रेम, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रतापनारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन सिंह, अंबिका दत्त व्यास, रामकृष्ण वर्मा, सुधाकर द्विवेदी, राधाचरण गोस्वामी, लाला सीताराम रामकृष्णदास आदि सभी ने बाबू हरिशचंद्र का नेतृत्व स्वीकार किया तथा उनके निर्देश एवं सहमति से ही इन सब ने काव्य रचना के नये स्वरूप को स्वीकार किया।''[13]

भारतेन्दु युग में कुछ कवियों ने ब्रजभाषा के साथ-साथ खड़ीबोली में भी रचना प्रस्तुत की ''श्रीधर पाठक, चौधरी बद्रीनारायण 'प्रेमधन', पं. अम्बिका दत्त व्यास एवं प्रथापनारायण मिश्र आदि है।'' कुछ कवियों ने तो खड़ीबोली का विरोध किया।''[14]

कविवर जगन्नाथ दास रत्नाकर ने खड़ीबोली से श्रुब्ध होकर लिखा था।

''जात खड़ीबोली पै कोउ भयो दिवानौ

कोऊ तुकात बिन पद्म लिखन में है अरुझानौ (समालोचनादर्श)''

जैसे-जैसे समय और परिस्थिति में बदलाव आता गया वैसे-वैसे काव्य और काव्य की भाषा, विषयवस्तु में परिवर्तन आता गया। काव्य में ब्रजभाषा अपना अस्तित्व बना लिया था किन्तु धीरे-धीरे वह कम होता गया ब्रजभाषा का स्थान खड़ीबोली लेने लगी किन्तु कविगणों ने हार नही मानी वह नई भाषा के साथ-साथ पुरानी भाषा को भी अपनाए रहे। यही कारण है कि आज भी ब्रजभाषा में रचनाएँ की जाती है।

''यह बड़े गौरव की बात है कि निर्णायक युद्ध में पराजित हो जाने के पश्चात् भी ब्रजभाषा के कवि अपनी संपूर्ण आस्थाओं के साथ ब्रजभाषा में उत्कृष्ट काव्य रचना करते रहे और भले ही अपने प्रयत्नों से वे युग को प्रवाह बदलने में समर्थ न हुए हो परन्तु उनका रचा गया ब्रजभाषा काव्य एक उत्तुंग स्मारक स्तंभ की भांति खड़ा हुआ है। श्री जगन्नाथ दास रत्नाकर जैसे कवियों की यह निष्ठा सराहनीय ही कही जायेगी।''[15]

आधुनिक युग में ब्रजभाषा काव्य के विषय भी समयानुरूप परिवर्तित होते गए। इसलिए ''आधुनिक युग में रचे गये ब्रजभाषा काव्य को तीन वर्गो में विभाजित किया गया है।''

1. पूर्व भारतेन्दु युग
2. भारतेन्दु युग
3. उत्तर भारतेन्दु युग

पूर्व भारतेन्दु युग में कवियों ने परम्परागत काव्य शैली को अपनाया जिसमें मध्यकाल के राधा-कृष्ण की लीला, संयोग वियोग आदि को प्रस्तुत किया।

इनमें मुख्य कवि है **''ग्वाल, दीनदयाल गिरी, कविरत्न नवनीत, गोविन्द गिल्लाभाई, आदि। भारतेन्दु हरिशचंद्र प्रथम उत्थान काल के सर्वप्रमुख कवि है जिन्होंने ब्रजभाषा में परंपरित मानदण्डो एवं आधुनिक सदंर्भो को बड़े संतुलित रूप से काव्यक्ति किया तथा सफलता अर्जित की।''[16]**

उत्तर भारतेन्दु युग में कवियों ने समाज में व्याप्त बुराईयों, राजनीति के

उलटफेर पर रचना करते हुए समाज का ध्यान उस ओर आकर्षित करते हुए राष्ट्रीय भावना जागृत करने की कोशिश की जिन में मुख्य कवि रामचन्द्र शुक्ल, जगन्नादास, रत्नाकर, वियोगी हरि, दुलारे लाल भार्गव, रामनाचर ज्योतिषी,केसरी सिंह बारहट, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही रायकृष्ण दास, उमाशंकर बाजपेयी उमेश, देवीद्विज, ऋषिकेश चतुर्वेदी कविरत्न गोविन्द जी आदि उल्लेखनीय है।

द्विवेदी युग में ब्रजभाषा काव्य अपने पुराने रूप से हटकर अलग रूप में प्रस्तुत हुई। इस युग के कवियों ने कृष्ण लीला, भक्ति के स्वरूप को छोड़कर, आदर्शवादी रूप को प्रधानता दी, और नये मूल्यों की स्थापना की इसके लिए 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' द्वारा जो खड़ी बोली काव्य प्रस्तुत किया जा रहा था उसके प्रभाव स्वरूप ब्रजभाषा काव्य में परिवर्तन आया किन्तु खड़ी बोली के मुकाबले ब्रजभाषा कम प्रचलित हुई।

द्विवेदी युग में कविगणों ने ब्रजभाषा में मौलिक रचनाओं के साथ-साथ अनुदित रचनाएँ भी रची।

'जैसे रामायण, भागवत् आदि उपजीव्य संस्कृत काव्यों और नाटकों में विशेषकर कालिदास, भवभूति, शूदक, जयदेव आदि की रचनाओ ने भारतेन्दु युग के अनेक, रचनाकारो को आकृष्ट किया और उनके अनेक ब्रजभाषा अनुवाद हुए।'[17]

अंग्रेजी से 'श्रीधर पाठक' के 'गोल्ड स्मिथ' की 'डेजर्टेड विलेज' को 'उजड़ ग्राम' सत्यनारायण कविरत्न के होरेशस तथा टेनीसन की कुछ कविताओं के अनुवाद रत्नाकर का पोप कृत 'आन त्रिनटि सिजम' की समालोचना दर्श नामक ब्रजभाषा अनुवाद आदि महत्वपूर्ण है। [18]

द्विवेदी युग में काव्यों की परम्परा में सर्वाधिक चर्चित रामचन्द्र शुक्ल का एडविन अर्नाल्ड के 'लाईट ऑफ एशिया' का बुद्ध चरित्र नामक भावानुवाद जिसका महत्व अनुवाद की दृष्टि से ही नहीं एक सफल मुक्त प्रधान ब्रजभाषा काव्य के रूप में भी है।[19]

द्विवेदी युगीन कविगणों का उद्देश्य सिर्फ ब्रजभाषा में कविता लिखना ही नहीं बल्कि आज के उभरते विचारों का संकलन, राष्ट्र और समाज के प्रति अपने विचार प्रकट करते हुए समाज में अपना अस्तित्व बनाये रखना था। इन्होंने अपने इस सामाजिक दायित्व को समझते हुए रचनाओं में बदलाव किया। वासनायुक्त से हटकर

लोक रीतियों की सुंदर अभिव्यजना की।

जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की 'हिडौल', 'शृंगारलहरी' तथा नाथुराम शर्मा 'शकंर' और गया प्रसाद शुक्ल सनेही की रचनाएं इसी प्रकार की है।

इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद कृत 'प्रेम पथिक' में प्रेम का व्यापक रूप प्रस्तुत किया है। और प्रेम में 'धैर्य, विरह त्याग और बलिदान को महत्व दिया है।'

''हिए राखि कछु धीरज साहि कछु पीर।
आशा और निराशा नैनन नीर।।''

'रामचन्द्रशुक्ल के 'शिवर-पथिक' का पथिक आर्थिक विपन्नता के कारण विवश होकर अंग्रेजी सेना अधिकारी के कहने पर अपनी नवविवाहीत को छोड़कर अफगान शुद्ध में सम्मिलत हो जाता है। इस कविता में युगयर्थाथ और जीववनगत विषमता का सुंदर चित्रण हुआ है। 'शिवर पथिक' की नायिक नही वह सामाजिक उत्तरदातिय्व की भावना से अनुप्रेरित है।'[20]

इस प्रकार द्विवेदी युग में प्रेम को एक नए रूप में प्रस्तुत किया है चाहे वह वियोग या संयोग दोनो ही रूप में मंगलकारी शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है।

''रामचन्द्र शुक्ल के बुद्धचरित्र में प्रेम के उदान्त एव शिव रूप का चित्रण हुआ है। सत्यनारायण कविरत्न ने प्रेमकली को प्रेम का स्वरूप प्रेम का आखर और सबद कहकर प्रेम के सामान्य से लेकर उसके विश्व बन्धुत्व 'तक की मीमांसा की है'

हरिऔध ने 'रसकलश' मे नवीन नायिकाओ की सृष्टि करके प्रेम के युग साप्रेक्ष्य एवं व्यापक रूप को भी प्रतिपादित किया है।''[21]

द्विवेदी युग में ब्रजभाषा कवियों ने जो परम्परा को तोड़कर नवीन प्रेम को उदान्त एवं व्यापक रूप में प्रस्तुत किया है वह अत्यंत ही अपूर्ण उपलब्धि है। जिस तरह ब्रजभाषा कवियों ने प्रेम को नवीन रूप में प्रस्तुत किया उसी तरह काव्य में वीरता को भी नवीन रूप दिया, प्राचीन युग में जो राजाओं के युद्ध प्राचीन युग में जो राजाओं के युद्ध हुआ करते थे वे आधुनिक युग में बदल चुके थे आधुनिक युग में देश में अंग्रेजों के विरुद्ध एक जंग चल रही थी जिसे नेता लड़ रहे थे। जो कि प्राचीन काल के युद्ध से एक दम अलग थे इस में राष्ट्रीयता की भावना थी, नेताओं में समानयमीता और

मौलिकता का जन्म हो रहा था।

'वियोगी हरि' ने महात्मागांधी को सत्यवीर कहा, इसी तरह नवीन वीर काव्यधारा को आगे बढ़ने में 'रायदेवी प्रसाद पूर्ण, अयोध्या सिंह उपाध्याय, जगन्नाथ दास रत्नाकर, मिश्रबन्धु, लाला भगवानदीन आदि का योगदान है।''[22]

ब्रजभाषा काव्य में कवियों ने प्रेम और वीरता को नये रूप में प्रस्तुत किया उसी तरह वह प्रकृति से भी अछूते न रहे। चमत्कार पूर्ण प्रकृति रूप को छोड़कर स्वतंत्र सत्ता का चित्रण किया।

'द्विवेदी युग के ब्रजभाषा काव्य में जहाँ उपेक्षित प्रकृति को अभिव्यक्ति मिली वही प्रकृति के उद्दीपन, आलम्बन, अंलकरण, उपदेशग्रहण, और रहस्यात्मकता तथा परोक्ष सत्ता के रूपों को भी स्वीकृति मिली प्रकृति के इन सभी रूपों के अतिरिक्त उसमें मानवीकरण प्रतीक-विधान, बिम्बग्रहण आदि के निमित्त भी उसका उपयोग स्फूट रूप में मिल जाता है।

प्रकृति चित्रण के इन रूपों के उदाहरण 'हरिऔध' पूर्ण कविरत्न रत्नाकर आदि के काव्य में सरलता से खोजे जा सकते हैं। [23]

द्विवेदी युग समाज में व्याप्त बुराईयों के ऊपर व्यंग्य कर ब्रजभाषा काव्यवस्तु में नये विषयो का जन्म हुआ। 'हास्य व्यंग्य के विषय, राजनीतिक शोषण, सामाजिक कुरीतियाँ, धर्मआडम्बर, लकीर की फकीरी, विदेशीयता का अन्धानुकरण, फैशन परस्ती, व्यभिचार, आदि है। आचार्य द्विवेदी ने 'सरगौ नरक ठेकाना नाहि'' में कल्लु अलहैत के माध्यम से गांव को छोड़कर शहर जानेवाले तथा विदेशी सभ्यता का अधानुकरण करनेवाले लोगो की हास्यपद स्थिति का चित्रण इन शब्दों में किया है।

'अचकुन पहिरि बूट हम डाटा, बाबू बने ने डेरात-डेरात।
लागेन आवै जाय समन मां, कण्ठु कूट तब बना बतात॥'[24]

द्विवेदी युग में राजनीतिक बदलाव हुआ बंग-भंग आन्दोलन की सफलता के परिणाम स्वरूप राष्ट्रीय भावना जागृत हो गई।'' **'भारतेन्दु युग में देश भक्ति को जो तलवार राजभक्ति के म्यान मे रखी हुई थी वह द्विवेदी युग में नंगी शमशीर के रूप में बाहर आ गई थी।'**[25]

ब्रज कोकिल कवि सत्यनारायण स्वतन्त्रता की महिमा का वर्णन करते हुए

कहते है।

'जय जय जय स्वतंत्रते प्यारी।
तुवगति, नर मति समझ सफल नहि
अखिल लोक ते न्यारी।'[26]

ब्रजभाषा के प्रेम कवि हरिऔध छुआछूत जैसी कुप्रथा के प्रति भी जागरुक दिखाई देते है।

'इतनो हू समुझुत नहीं तऊ बनत है पूत।
जाको कहत अछूत है बामै कैसी धूत।।'[27]

इस प्रकार द्विवेदी युग में ब्रजभाषा काव्य में थोड़ा बदलाव आया। इस युग में ब्रजभाषा काव्य की लोकप्रियता कम हो गई क्योंकि खड़ी बोली अत्यंत व्यापक रूप में गद्य-पद्य दोनो ही विधाओं पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था ब्रजभाषा के ह्रास में प्रकाशित इन पत्र पत्रिकाओ का प्रमुख भूमिका रही।

'बिहारी बन्धु, भारतेन्दु लक्ष्मी, नृसिंह, भारत मार्तण्ड, गोधर्मप्रकाश, श्री हरिशचन्द्र मेगजीन, वसुन्धरा, नागरिक प्रचारक आदि पत्र-पत्रिकाएं मुख्य है।'

आचार्य द्विवेदी जी ने तो सरस्वती पत्रिका में ब्रजभाषा की कविताएँ नही छप सकेगी ऐसी नीति निधारण कर दी। जिस के कारण पाठक भी खड़ीबोली की तरफ आकर्षित हुए और ब्रजकाव्य का क्षरण होने लगा।

''नवयुग के सघर्ष को वहन करने के लिए खड़ीबोली ही उपयुक्त थी ब्रजभाषा का माधुर्य, उसकी संगीतात्मकता और भाव-सिद्दि उत्कृष्ठ होते हुए भी तत्कालीन परिवेश की अभिव्यक्ति में समर्थ नहीं थी यहाँ तक कि जो कवि ब्रजभाषा एवं खड़ीबोली दोनों भाषाओं में रचना करने में सिद्धस्त थे वे ब्रजभाषा में पुराने ढंग की और खड़ीबोली में नवीन विषयों की कविता लिखते थे। द्विवेदी युग में स्वतंत्र रूप से खड़ीबोली में लिखनवाले समर्थ कवियों का बाहुल्य हो चला था, उनकी रचनाओं ने खड़ीबोली की साख जमा दी थी इसलिए यद्यपि इस युग में ब्रजभाषा में भी पर्याप्त रचना होती रही और उसमें नए विषयों को ढ़ालने की भी चेष्ठा की गई परंतु अपने युगबल के कारण खड़ी बोली ही आगे बढ़ती गई।''[28]

युगधारा के अनुरुप खड़ीबोली का बोलबाला था किन्तु ब्रजभाषा के प्रेमी अभी

भी ब्रजभाषा का गौरवगान गा रहे थे। इस युग में ब्रजभाषा के पक्षधर में ग्रियसन, श्री वियोगी हरि, पं. पदमसिंह शर्मा, पं. कृष्ण बिहारी मिश्र, पं. किशोरीदास वाजपेयी, पं. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, दुलारेलाल भार्गव, उमरराव सिंह पाण्डे आदि ब्रजभाषा के प्रशसक और हामी थे। इधर ब्रजभाषा के उग्र विरोधियो में श्री गोवधन लाल एम. ए, कालिका प्रसाद दीक्षित, कुसुममाकर, जगन्नाथ प्रसाद दीक्षित कुसुभाकर, जगन्नाथ प्रसाद मिश्र एव रामनरेश त्रिपाठी आदि थे।

जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' ब्रजभाषा के समर्थक थे परन्तु उन्होंने भी यह स्वीकार कर लिया था ''कि खड़ीबोली ही भविष्य की कविता की भाषा है। 'भविष्य में इस कविता का ही सौभाग्यदय होनेवाला ही जगनियत जगदीश्वर ने हमारे भविष्य जीवन के लिए जो पथ निर्धारित कर दिया है। और उसी पर हमको चलना पड़ेगा और उसी में हमारा कल्याण भी है।''[29]

इसी प्रकार कविवर मैथिलिशरण गुप्त ने इस विवाद में युग परिवर्तन की सूचना देते हुए ब्रजभाषा को प्रकारन्तर से नवयुग के अनुकूल नही माना था।

बजत नाहिं अब और चैन की बंशी घर घर।
भय विषाद सो भरौ हियौ काँपत है धर थर ॥
वह पराग कौ पुज, मदन ध्वज-पट न उड़त है।
धुआँधार यह देख कौन को जीव जुड़त है॥

* * *

जो तेरी यह बहिन खरी है तेरे आगे।
दै याकों आसीस और का अब हम मागै।[30]

छायावादी कवियों में गुप्त जी, पं. अयौध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, जयशंकर प्रसाद, निराला जी, पंत जी आदि ने ब्रजभाषा में अनेक काव्य रचे थे वे भी खड़ीबोली के नवीन रूपम को स्वीकार किया। ''सुमित्रानंद पंत ब्रजभाषा काव्य के सबसे कठोर समालोचक रहे है'' उन्होंने ब्रजभाषा साहित्य के संबध में पल्लव की भूमिका में लिखा है- **''उस ब्रज की उर्वशी के दाहिने हाथ में अमृत का पात्र और बाँए में विष से परिपूर्ण कटोरा है, जो उस युग के नैतिक पतन से भरा छलछला रहा है। ओह, उस पुरानी गुदड़ी में असंख्य छिद्र अपार की संकीरणताएँ हैं पंत जी का भी विश्वास था**

कि नवयुग के लिए नववाणी ही उपयोगी है।''[31]

ब्रजभाषा साहित्य की प्रशंसा करते हुए भी उस समय के समालोचक इस तथ्य को स्वीकार कर चुके थे कि 'रीतिकाल ब्रजभाषा की कविता का कलायुग था छायावाद काल खड़ीबोली की कविता का कलायुग है।'

निराली जी ब्रजभाषा का पूरा-पूरा सम्मान करते थे किन्तु नवयुग की भाषा खड़ीबोली को ही मानते थे इस सन्दर्भ में उन्होंने लिखा है- **''हिन्दी साहित्य की पृथ्वी पर अब ब्रजभाषा का प्रलयपयोधि नही है वह जल राशी बहुत दूर हट गई, राष्ट्रभाषा के नाम से उससे जुदा एक दूसरी भाषा ने आँख खोल दी पर धृतवानसि वेदम के भल की नजर मे अभी यहाँ वही सागर उमड़ रहा है। नही मालूम बेवक्त की शहनाई का और क्या अर्थ है।''**[32]

छायावादी युग के प्रमुख कवि है 'रत्नाकर, रामचन्द्रशुक्ल, वियोगी हरि, दुलारेलाल, भागर्व, रामनाथ जोतिसी, केसरी सिंह बारहट, गयाप्रसाद शुक्ल, रायकृष्णदास तथा उमाशंकर वाजपेयी उमेश है इन कवियों की प्रसिद्ध कृतियाँ है उद्धशतक, बुद्धचरित, वीर सतसई, दुलारे दोहवली, रामचन्द्रोदय काव्य, प्रतापचरित्र, फुटकर कविताएँ, ब्रजरज तथा ब्रजभारती और भी बहुत से कवियों ने संवत 1675 से 1995 तक इन दो दशको में ब्रजभाषा में काव्य रचना की है। शुक्ल जी के अनुसार- **''यद्यपि खड़ीबोली का चलन हो जाने से अब ब्रजभाषा की रचनाएँ बहुत कम प्रकाशित होती हैं पर अभी देश में न जाने कितने कवि नगरों और ग्रामों में बराबर ब्रजवाणी की रसधारा बहाते चल रहे हैं। जब कहीं किसी स्थान पर कवि सम्मेलन होता है। तब न जाने कितने आग्रत कवि आकर अपनी रचनाओं से लोगों को तप्त कर जाते है।'**[33]

''छायावाद युग में रामचन्द्रोदय काव्य रसकलस (हरिऔध) तथा ब्रजरज भक्ति और रीति की रचनाएं हैं, वीर सतसई वीर काव्य है। 'बुद्धचरित' एडविन आर्नल्ड कृत 'लाइट आए एशिया' का ब्रजभाषा पद्य में अनुवाद है। अनूप शर्मा का चपू काव्य 'फेरिमिलिबो' वचनेश की शबरी, रामेश्वर करुण की 'करुण सतसई' आदि हैं।''[34]

खड़ीबोली के मुकाबले ब्रजभाषा काव्य की रचनाएँ कम हो रही थी किन्तु

ब्रजभाषा को चाहने वाले कवियों ने ब्रज का साथ नहीं छोड़ा। उन्होंने नवयुग की परिस्थितियों के बदलाव स्वरूप काव्य में हुए विषयों परिवर्तनों को अपनाया। अपनी कलात्माकता का परिचय देते हुए भक्ति और शृंगार से आगे निकलकर रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

जैसे : अछूत्तोद्वार की समस्या पर आधारित वचनेश की शबरी, वर्ग विषमता से उत्पन्न करुणचीत्कार को प्रस्तुत करती 'रामेश्वर' करुण की 'करुण सतसई' आदि।

जिस तरह समय परिवर्तन स्वरूप काव्य के विषय में परिवर्तन आया उसी तरह काव्य की भाषा पर भी प्रभाव पड़ा। काव्य की भाषा जहाँ खड़ी बोली होने लगी वहीं ब्रजभाषा के काव्य पूर्णतः ब्रजभाषा में न होकर उनमें उर्दू, फारसी शब्दों के साथ-साथ अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग होने लगा। जैसे 'फुटबॉल शब्द' 'कैप' 'किशोरीदास वाजपेयी' द्वारा रचित

फूलि रहो फुटबाल त् वृथा न नीच लजात।
ठोकर दैव का काज ही उदर भरयौ तुव जाता।।[35]

बालमुकुंद गुप्त लिखते हैं -

मेरे सिर पर कैप अरु मोट पुच्छ लहरात।
तेरे सिर लिपटी फटी साफ मजूर देखात।।[36]

नई शैली में भी रचनाएं प्रस्तुत की गई। उमाशंकर बाजपेयी 'उमेश' द्वारा रचित-

वह नील सिखर तै उतरी अनुरागमयी निसी बाला,
स्वागत कौ अर्वान खड़ी लै सुठि सांझ सुमन की माला।
सुभ सांवल तन पै सोहत तारक जुत मृदु तिमिरांचल
मंजुल ग्रीवा पै विथुरे धुधरारे कारे कुतलं।।[37]

इनका शिल्प खड़ी बोली के छायावादी काव्यों जैसा ही है। पुराने छंदों के साथ-साथ नए छंदों का भी प्रयोग हुआ बहुत से नए गीत रचे गए जिनमे अनेक छंदों का समिश्रण किया गया।

'अतुकांत और मुक्त छंदों का प्रयोग भी विशेषकर उमाशकंर वाजपेयी

'उमेश' तथा रामाजा 'समीर' की रचनाओं में मिलता है। [38]

छायावादी युग में काव्य रूप भी देखने को मिलते है। 'आधुनिक काल में भारतेन्दु की मुक्त रचना के परिपार्शव में महाराज रघुराज सिंह का 'रामस्वयवंर, मधुसूदन दास की 'रामाश्वमेघ', स्वयं भारतेन्दु के पति का लिखा जरासंघवध अदि सफल प्रबंधकाव्य भी दिखाई देते है।

आलोच्यकाल मे ब्रजभाषा ने दोनों काव्य रूपों को अपनाया है। इस युग में महाकाव्यो में 'रामचद्रोदय काव्य' (रामनाथ जोतिसी) और बुद्धचरित (रामचन्द्र शुक्ल) की रचना हुई। खण्डकाव्यों मे गंगावतरण (रत्नाकर), शबरी (वचने मिश्र). दोपदीफूल (नाथूराम माहौर) अदि उल्लेखनीय है।

''डॉ. जगदीश वाजपेयी ने इस युग के प्रबंध और मुक्तक काव्य के बीच की आधुनिक काल में रचित छः विधाएँ और मानी है-

वर्णानात्मक काव्य, निबंध काव्य, प्रद प्रबंधा, आख्यानक काव्य या काव्य कथा, विवरणात्मक काव्य, सबद्ध मुक्तककाव्य, तथा कौतुक काव्य।

इसी प्रकार गीतिकाव्य को मुक्तक से स्वतंत्र मानने की आवश्यकता स्वीकार करते हुए उन्होंने इसके शोकगीत, जागरणगीत या राष्ट्रगीत, व्यंग्यगीत, संबोधनगीत, वीरगीत जैसे विभाग किए है परन्तु यह सभी काव्य रूप के ब्रजभाषा में नियमित और निश्चत रूप के नही रहे।'' [39]

अनूप शर्मा का चम्पूकाव्य जिसका प्रकाशन 1938 ई. में हुआ इस युग की महत्वपूर्ण कृति मानी गई है। इनमें ब्रजभाषा के गद्य-पद्य दोनो का सफल प्रयोग मिलता है।

काव्यरूपों की द्रष्टि से यह युग ब्रजभाषा काव्य के लिए नवप्रयोग शील रहा है। इस युग में ब्रजभाषा ने बहुत नही तो प्रर्याप्त विस्तार किया है।

भारतेन्दु युग से अब तक अनेक कवि हैं जिन्होंने नवप्रयोगकाल की ब्रजभाषा में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। जिस में मुख्य हैं अयोध्यानाथ जी अवधेश, पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', 'बाबू जगन्नाथ दास रत्नाकर, लाला भगवनदीन दीन, कन्हैयालाल पौद्धार, सैयद अमीर अली मीर, वचनेश मिश्र, पं. राजाचन्द्र शुक्ल, आदि कवि अपनी ब्रजभाषा रचनाओ द्वारा पूर्वप्रतिष्ठत हो चुके थे परंतु इनकी काल को भी

महत्वपूर्ण देन थी।

आधुनिक ब्रजभाषा के कवियों का क्रमबद्ध विवरण एक भी स्थान पर नही मिलता। श्री राम नारायण अग्रवाल ने ब्रजभाषा के आधुनिक शीर्षक लेख से निम्नलिखित कवियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है। इनमें कविवर ग्वाल, कवि उरदाम जी चौबे, नवीन कवि, हरदेव, लाल साधूराम, किशोर, खणकवि, राजकुमार, रत्नसिंह, भटनागर, सेवक, रीवा नरेश महाराज रघुराज सिंह, नारायणस्वामी, रंगलाल राजा लक्ष्मण सिंह, देवीद्विज, सरदार, गोविन्द गिल्लाभाई, बाबा रघुनाथदास, राम सनेही, हनुमान, ललित किशोरी, ललितमाधुरी, लक्ष्मीराम, गोपभट्ट, लाल बलवीर, नवनीत जी चतुर्वेदी, भोलाराम भंडारी, नारायण दास सैगंरिया, प्रेमी जी, भारेतन्दु बाबू हरिशचन्द्र, रामकृष्ण देव, शरण सिंह जी गोप, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रतापनारायण मिश्रा, नाथूराम शर्मा शंकर, ठाकुर जगमोहन सिंह, लाला सीताराम बी. ए. श्री राधाचरण जी गोस्वामी, पं. अंबिकादत्त व्यास, बाबू राधाकृष्णदास, ब्रजचंद्र जी वल्लभीय, पं. विजयानंद जी, पं. श्रीधर पाठक, पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, महापात्र लाल जी, बाबू जगन्नाथजी रत्नाकर, लाल भगवनदीन, रायदेवी प्रसाद पूर्ण, ब्रजेशजी, बलराम मिश्र द्विजेश, सेठ कन्हैयालाल पोददा्र, मिश्रबन्धु, सीतामऊ नरेश राजाराम सिंहजी, वचनेश जी, किशनलालजी, वल्लभहसखा सत्यनारायण कविरत्न, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्याम सेवक, रामाधीन, पुरुषोत्तम दास सैया, नाथूराम महौर, नवीब रुस कलक, रामप्रसाद त्रिपाठी, कविरत्न ब्रजनदंन, वियोगी हरि, हरदयाल सिंह, डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल', अमृतलाल चतुर्वेदी, पं. रामदयाल, उमरराव सिंह पाण्डेय, अंबिकेश, पं. रूपनारायण पाण्डेय जगन सिंह, सेंगर रामलला, सेवकेन्द्र त्रिपाठी, गोविन्दजी चतुर्वेदी, रामनाथ ज्योतिषी, रामचन्द्रशुक्ल सरस, चौधरी लक्ष्मीनारायण सिंह, ईश, श्री राजेश दयाल श्रीवास्तव, अनूप शर्मा, दुलारे लाल, भार्गव रामलाल श्रीवास्तव लाल आदि।

'श्री जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ने भी इसी ग्रन्थ में निम्नाकिंत कवियों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया है-

- पं. अयोध्या सिंह नाथ 'अवधेश', डॉ. बैजनाथ सिंह 'किकर', बलराम प्रसाद मिश्र 'द्विजेश', पं. काशीपति त्रिपाठी, प्रेमी हरि आदि।'

'डॉ. विष्णु विराट ने आधुनिक ब्रजभाषा कवियों में बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर', गोस्वामी कन्हैयालाल जी महाराज, कविरत्न नवनीत जी, गोपालप्रसाद व्यास रामलाल, देवी द्विज, गोविन्दजी चतुर्वेदी, बाल मुकुन्दजी, दीनानाथजी 'सुमनेश', कैलाशचन्द्र कृष्ण, महेन्द्र चतुर्वेदी, विष्णुदत्त शर्मा, पं. राधेश्याम द्विवेदी, स्वामी श्री ब्रजेश महेन्द्र शर्मा, त्रिलोकनाथ ब्रजबल, राजेन्द्र रंजन, अमृतलाल चतुर्वेदी, वासुदेव गोस्वामी, सोमठाकुर, आत्मप्रकाश शुक्ल, डॉ. जगदीश गुप्त, रमेश रजक, काका हाथरसी, निर्भय हाथरसी, श्री नारायण चतुर्वेदी, बनारसीदास चतुर्वेदी, बिजेन्द्र स्नातक आदि विभिन्न ब्रजभाषा के विद्वानों रचनाकारों का सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया है।'

इसी प्रकार डॉ. कुमारी विशेष लक्ष्मी ने भारतेन्दु युग के परवर्ती ब्रजभाषा कवियों का नामोल्लेख करते हुए निम्नलिखित नामों की चर्चा की है- अम्बिकदत्त व्यास, अयोध्या नाथ, अवधेश, काशीपति त्रिपाठी, रावकृष्ण देव शरण सिंह, गोप, बाबू गिरधरदास, जगन्नाथदास रत्नाकर, जगमोहन सिंह, प्रेम हरि बेनद्विज, बचऊ चौबे, ब्रजचन्द्र वल्लभीय, बैजनाथ सिंह, किंकर, रामकृष्ण वर्मा राधाकृष्ण दास, रामचन्द्र शुक्ल, लक्ष्मीनारायण सिंह 'इश', पं. विजयानंद, सरदार कवि, सुधाकर द्विवेदी, हनुमान कवि आदि। (यह सभी बनारस के कवि थे।)

'इनके अतिरिक्त आशराम शर्मा, किशोर चन्द, कपूर 'किशोर', गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' जगदम्बा प्रसाद मिश्र, हितेषी रायदेवी प्रसाद पूर्ण, प्रणेयेश, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण शर्मा, नवीन बचनेश, श्याम नारायण मिश्र, श्याम बिहारी शुक्ल तरल, सत्यनारायण पाण्डेय (यह सभी कानपुर के निवासी थे।)'

'पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र (बुदौआ)' गुरु तथा रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' (प्रयाग के)। अंबिकेश, डॉ. आनंद, नवीन, बख्स फलक, नाथूराम मटौर प्रचण्ड, ब्रजेश एंव लाला कवि (बुन्देलखण्ड)। ऋषिनाथ, ठाकुर, नरहिर, बंदीजन, लाला भगवानदीन, भवानीदास, महापात्र लाल रामदत्त (फतेपुर के)। वल्लभ दीक्षित, ललितेश, एवं शिशुपाल 'शिशु' (इटावाक) अविकेश, भट्ट ब्रजेश तथा श्याम सेवक (रीवा के)। अनूप शर्मा, रामप्रसाद त्रिपाठी ठाकुर रामेश्वर बख्स सिंह, दत्त द्विजेन्द्र (सीतापुर के अयोध्या नाथ 'अवधेश' बलराम मिश्र तथा लच्छीराम ब्रह्मभट्ट (बस्तीक)। उमराव सिंह पाण्डेय, पं. गगांधर गगं कवि तथा शिवशंकर भारती (मैनीपुरी के)। खूबीराम बैध

गजराज सिंह सरोज, जगन सिंह सेंगर, नाथूराम शंकर शर्मा बाबू राम प्रेमी, मुकुन्द कवि, शिवलाल बाबू शीतल दास (मोनी) तथा श्यामलाल (अलीगढ़), ईश्वरी बहोरे, गंगा प्रसाद (कमठान) तथा गंगाप्रसाद पाण्ड्ेय (घौलपुर के)। कुंभन तथा सावल प्रसाद चतुर्वेदी (भरतपूर के) अजयराम लबानिया, मुंशी पन्नालाल प्रेमपुंज, पं. मुरलीधर मोती, मन्नी, रामचंन्द्र सेनी, शेठ कवि, श्रीधर पाठक तथा हरिशंकर शर्मा (आगरा के)।

'इनके अलावा लच्छीराम (अयोध्या), गोविन्द गिल्लाभाई (कठियावाड) कुवंर हरिशचन्द्र देव वार्मी चातक (फरुँखाबाद) रामलाल श्रीवास्तव (गोरखपुर), यज्ञदत्त शर्मा (डेवार्ड), बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन (मिर्जापुर), रामप्रसाद त्रिपाठी तथा कपिल (मुजफ्फरनगर), ब्रजनन्दन कविरत्न (रायबरेली), रूपवारायइण पाण्डेय, (लखनऊ) तथा शिनंदन सहाय (सिहोर)।'

'इनके अतिरिक्त मथुरा वृन्दावन क्षेत्र के प्रमुख कवियों के नाम इस प्रकार है- उरदाम, कालीचरण, माली, गोस्वामी, कन्हैयालाल, सेठ कन्हैया लाल पोद्दार, कृष्ण कवि (सतरज मास्टर), किशोरी रमण अली, खडग कवि, कुवंर गजराज सिंह, गोप भट्ट, गोपालटाम बंन्दीजन गोविन्दजी कवि, ग्वालकवि, चुन्नीलाल शेष, छवीलेलाल, दयानिधि, द्विजदेव, देवी द्विज, नाथीलाल जाडिया, नन्दनन्दन, नवनीत चतुर्वेदी, नत्थुमल हलवाई, नवीन, नारायणदास शर्मा, 'मुनीम', नारायणदास दालवाले, नारायणदास संगरिया, पतोल, प्रियतम दत्त चतुर्वेदी, चच्चन प्रेमी कवि, पुरुषोत्तमदास सैया, बलभद्र, वल्लभ सखा, ब्रजवल्लभ, बाबूलाल सर्राफ, विष्णु चतुर्वेदी, उस्ताद विरजी सिंह, भगवानदत्त चतुर्वेदी, भोलानाथ भंडारी, गुरुमनिया भट्ट, मदन मोहन, मनिकलाल, मुरली कवि, रमणलाल गोस्वामी, रामचन्द्र 'चन्द्र', रामलला ललाकवि, रामदयाल दयालकवि, राधाचरण गोस्वामी, रोशनलाल वेदपाठी, लाड्ली 'लाल', बलबीर, श्याम सुन्दर श्रीनाथ लाला सायूराम, सूदन हरदेव, हीरालाल चतुर्वेदी आदि।'

'यदि ब्रजभाषा के कवियों की सम्पूर्ण सूची बनायी जाय तो विगत सौ वर्ष के अतरांल में ही सहस्त्रधिक ऐसे कवि हुए है। जिन्होंने ब्रजभाषा में अधिकारिक ढ़ंग से काव्य रचना की है। वर्तमान काल में धीर-धीरे अब इस प्रकार के ब्रजभाषा कवियों का ह्रास होता जा रहा है। सम्प्रति जिन कवियों का काव्य आधुनिक युग की अत्यन्त निकटवर्ती अविधारा को स्पर्श करती है। उनमें पं. अमृत लाल, चतुर्वेदी, कृष्णलाल

कुसुमाकर, पं. प्रणव शास्त्री, मानव जी, वल्लभ दीक्षित'शिवदत्त चतुर्वेदी, कैलाशचन्द्र 'कृष्ण', गोविन्द चतुर्वेदी, गोपाल प्रसाद व्यास, गोविन्द राम पाठक, दीनानाथ चतुर्वेदी, सुमनेश, देवकीनन्दन कुम्हेरिया, बालमुकुन्द चतुर्वेदी, मुकुन्द, यमुना प्रसाद चतुर्वेदी प्रीतम, रामनारायण अग्रवाल, राजाबाबू वर्मनन, डॉ. विष्णु विराट, ज्योतिषी राधेश्याम द्विवेदी, विष्णुदत्त शर्मा, कवि मणि, कृष्णदास चतुरथ, श्यामचरण श्याम तथा हरदेव गुप्त आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

* * * * *

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - लेखक : पं. रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 1
2. हिन्दी साहित्य का अतीत (प्रथमभाग), लेखक-आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पृ. 46
3. हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास (द्वितीय भाग) लेखक : करुणापति त्रिपाठी, पृ. 19
4. सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य, लेखक : डॉ, शिवप्रसाद सिंह, पृ. 70
5. ब्रज साहित्य और संस्कृति, लेखक : डॉ. आनंद स्वरूप पृ. 610
6. युगल किशोर अभिनंदन ग्रंथ, गुजरात हिन्दी प्रचारिणी सभा, बड़ौदा- पृ. सं 58

7 आधुनिक ब्रजभाषा कवि और काव्य : लेखक - माया पाण्डेय, पृ. 20

8. ब्रज साहित्य और संस्कृति, लेखक : आनंद स्वरूप पाठक पृष्ठ- 610
9. ब्रज साहित्य और संस्कृति लेखक : आनंद स्वरूप पाठक-पृष्ठ संख्या-611

10 आधुनिक ब्रजभाषा कवि और काव्य : लेखक : माया प्रकाश पाण्डे पृ. सं. 22

11. आधुनिक ब्रजभाषा काव्यः लेखक जगदीश वाजपयी पृ. स. 252
12. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास (अष्टमभाग) : लेखक : डॉ. विनय मोहन शर्मा पृष्ठ-367
13. आधुनिक ब्रजभाषा कवि और काव्य : लेखक - मायाप्रकाश पाण्डे पृ.सं 29
14. हिन्दी साहित्य का वृद्ध इतिहास-दशम भाग, डॉ नगेन्द्र, पृ. स. 399
15. हिन्दी साहित्य का वृद्ध इतिहास-दशम भाग, डॉ. शरण बिहारी गोस्वामी, पृ. स. 403
16. हिन्दी ब्रजभाषा कवि और काव्य, लेखक-माया प्रकाश पाण्डे, पृ.स. 23
17. हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास, भाग-16, लेखक -सुधाकर पाण्डे, पृ. सं 505
18. पुस्तक-वही, लेखक -वही, पृ. 506
19. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास (सोलवां भाग) लेखक : सुधाकर पाण्डे, पृ 506
20. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, लेखक : सुधाकर पाण्डे, पृ. सं. 512

21 पुस्तक : वही, पृ. स. 512

22. पुस्तक : वही, पृ. स. 514

23 पुस्तक : वही, पृ. स. 514

24. हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखक : डॉ. नगेन्द्र, पृ. सं 501
25. ब्रजभाषा का गौरवपूर्ण अतीत, लेखक : आनंद स्वरूपपाठक, पृ स. 612
26. पुस्तक : वही, पृ. स. 612
27. पुस्तक : वही, पृ. स. 612
28. पुस्तक : हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, लेखक : डॉ. नगेन्द्र, पृ सं. 400
29. पुस्तक : वही, पृ. स. 401
30. पुस्तक : वही, पृ स. 402

31 पुस्तक : वही, पृ. स. 402

32. पुस्तक : वही, पृ. स. 401

33 हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास (दसवां भाग) लेखक : डॉ. नगेन्द्र, पृ. 405

34. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास (दसवां भाग) लेखक : डॉ नगेन्द्र, पृ. 402
35. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास (दसवां भाग) लेखक-डॉ. नगेन्द्र, पृ. 411
36. आधुनिक ब्रजभाषा कवि और काव्य, लेखक : मायाप्रकाश पाण्डे, पृ 100
37. पुस्तक : वही, पृ. स. 411
38. पुस्तक : वही, पृ. स. 413
39. पुस्तक : हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास (दसवां भाग) लेखक - डॉ. नगेन्द्र, पृ 413